2 मार्च 2016, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI प्रतिदिन
सुख, शान्ति, समृद्धि
प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 38, अंक : 23 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
मार्च (प्रथम), 2016 (वीर नि. संवत्-2542) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव संपन्न

गुना (म.प्र.) : यहाँ श्री 1008 सीमंधर कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर मंदिर ट्रस्ट गुना के अन्तर्गत पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर एवं मुमुक्षु मण्डल गुना के संयुक्त तत्त्वावधान में श्री 1008 महावीर दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव शुक्रवार, दिनाँक 12 फरवरी से बुधवार 17 फरवरी 2016 तक अनेक विशिष्ट कार्यक्रमों सहित सानंद सम्पन्न हुआ।

महोत्सव में आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित ज्ञानचंदजी विदिशा, डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी, डॉ. विनोदजी चिन्मय, पण्डित मुकेशजी तन्मय, डॉ. राकेशजी नागपुर, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर इत्यादि अनेक विद्वानों का सानिध्य प्राप्त हुआ।

पञ्चकल्याणक की सम्पूर्ण प्रतिष्ठा-विधि प्रतिष्ठाचार्य ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना द्वारा सह-प्रतिष्ठाचार्य पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित विवेकजी इन्दौर, पण्डित अंकितजी शास्त्री लूणदा, पण्डित सुकुमाल झांझरी, पण्डित कांतिकुमारजी इन्दौर, पण्डित रमेशजी सनावद के सानिध्य में शुद्ध तेरापंथ आम्नायानुसार संपन्न हुई।

बालक वर्धमान के माता-पिता बनने का सौभाग्य श्रीमती संतोषनी-सुभाषजी सर्राफ विदिशा को प्राप्त हुआ। महोत्सव के सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी इंजी अर्पण-कृति जैन बंधु गुना, कुबेर इन्द्र-इन्द्राणी श्री पंकज-निधि जैन इन्दौर एवं महायज्ञनायक-नायिका इंजी सचिन-सुयशी जैन बंधु गुना थे। यागमंडल विधान का उद्घाटन जैन जागृति महिला मंडल गुना, प्रतिष्ठा मंच का उद्घाटन श्री सुनीलकुमारजी शुभमजी भोपाल एवं प्रतिष्ठा मण्डप का उद्घाटन श्री अशोककुमारजी अनुरागजी गंजबासौदावाले गुना परिवार ने किया। महोत्सव का ध्वजारोहण श्री निहालचंदजी जैन पीतल फैक्ट्री जयपुर के करकमलों द्वारा किया गया।

बाल तीर्थंकर का सर्वप्रथम अभिषेक करने का सौभाग्य श्री शांतिलालजी जैन अलवरवाले जयपुर को मिला। सर्वप्रथम पालना झूलन श्रीमती कुसुम-प्रदीपजी चौधरी किशनगढ ने किया। सर्वप्रथम आहारदान का सौभाग्य श्री प्रेमचंद ध्याता बजाज कोटा व श्री दिनेशजी अखिलेशजी सिंघई चेतन ट्राउजर इन्दौर को प्राप्त हुआ।

इस महोत्सव में सीमंधर आदि 20 तीर्थंकर भगवान एवं पंच बालयति

(शेष पृष्ठ 8 पर ...)

छपते-छपते...

स्वर्ण जयन्ती महोत्सव वर्ष का शुभारंभ

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में दिनांक 26 से 28 फरवरी, 2016 तक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का चतुर्थ वार्षिकोत्सव एवं स्वर्ण जयन्ती महोत्सव वर्ष का शुभारंभ अनेक मांगलिक आयोजनों सहित हुआ।

इस अवसर पर आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल,पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली एवं डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर आदि विद्वानों के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ।

इस महोत्सव में प्रात:काल पंचपरमेष्ठी विधान एवं सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति का भी आयोजन हुआ। सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अन्तर्गत विशेष भजन संध्या एवं पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन द्वारा कथाओं का आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त स्वर्ण जयन्ती वर्ष की तैयारियों संबंधी गोष्ठियों का आयोजन किया गया।

विधि-विधान के कार्य पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन के निर्देशन में पण्डित गोमटेशजी शास्त्री एवं महाविद्यालय के छात्रों द्वारा संपन्न हुये।

महोत्सव के विस्तृत समाचार अगले अंक में प्रकाशित किये जायेंगे।

वेदी प्रतिष्ठा संपन्न

उदयपुर (राज.) : यहाँ हिरणमगरी सेक्टर 14 में श्री सुजानमलजी गदिया की भावनानुसार दिनांक 22 से 24 फरवरी तक त्रिकालवर्ती तीर्थंकर जिनालय में पंचमेरु की वेदी प्रतिष्ठा संपन्न हुई।

इस अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के अतिरिक्त ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री खनियांधाना, डॉ. योगेशजी शास्त्री अलीगंज एवं पण्डित ऋषभजी शास्त्री उदयपुर के प्रवचनों का लाभ मिला।

कार्यक्रम में 80 परिवारों द्वारा वेदी प्रतिष्ठा की गई। इस अवसर पर ध्वजारोहण श्री अजितजी जैन बड़ौदा ने किया।

विधि-विधान के समस्त कार्य ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री खनियांधाना के निर्देशन में पण्डित सचिनजी शास्त्री चैतन्यधाम व पण्डित अंकितजी शास्त्री लूणदा के सहयोग से संपन्न हुये।

कार्यक्रम का संचालन पण्डित ऋषभजी उदयपुर ने किया।

सम्पादकीय –

संस्कारों का महत्व

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

'संतोषी सदा सुखी, बहुधंधी बहु दुखी' का सिद्धांत अब धीरे-धीरे डॉ. धर्मचन्द की समझ में आने लगा था; क्योंकि बहुधंधी होने के कारण वे राजू पर उतना ध्यान नहीं दे पाये, जितना उसके जीवन के विकास के लिये आवश्यक था। उनके एकमात्र पुत्र राजू के आवारा होने में उनका धनोपार्जन में अतिव्यस्त रहना भी एक कारण था। पुत्र के लोभ में उन्होंने परिवार तो बढा लिया था, पर अब उसके भरण-पोषण के लिये धनोपार्जन करने में उन्हें दिन-रात एक करने पड़ रहे थे।

जिसके लिये डॉ. धर्मचन्द यह सबकुछ कर रहे थे, वही उनका इकलौता बेटा यथोचित मार्गदर्शन व देखरेख की कमी के कारण किसी भी कक्षा में अच्छे अंकों से सफल नहीं हुआ। यद्यपि उसकी बुद्धि अच्छी थी, यदि उसे यथोचित मार्गदर्शन और पढने का पर्याप्त मौका मिलता तो वह प्रथम श्रेणी में ही हमेशा उत्तीर्ण होता। पर, दादा-दादी और बहिनों के काम के दबाव में वह कभी ढंग से पढ ही नहीं पाया था।

डॉ. दम्पत्ति की भी अपनी एक समस्या थी, वे बेचारे मजबूर थे, उनका धनार्जन में उलझने का सबसे बड़ा कारण उनकी तीन-तीन जवान कन्यायें थीं। वैसे वे स्वभावत: संतोषी प्राणी थे, पर परिस्थिति ही कुछ ऐसी निर्मित हो गई थी कि उन्हें धनार्जन के सिवाय दूसरा कोई रास्ता ही दिखाई नहीं देता था।

तीनों ही लड़कियाँ उच्च शिक्षा ले रही थीं, तीनों की शादी की समस्या सामने अलग मुँह उठाये खड़ी थी, दुर्भाग्य से लड़कियाँ भी रूप-रंग और कद-काठी में इतनी सुन्दर और आकर्षक नहीं थीं कि कोई भी उन्हें ललककर ब्याह कर ले जाये। अत: दहेज के लिये उन्हें अधिक से अधिक धनार्जन करना उनकी आवश्यक आवश्यकता बन गई थी।

दहेज न लेने का संकल्प करना तो उन्हें आसान था, पर दहेज न देने की बात तो सोचना भी उन्हें पागलपन-सा लगता था; क्योंकि वह अपने हाथ की बात ही नहीं है।

वे सोचते थे, ''आदर्श की बातें कोई कितनी भी कर ले, पर जिसके घर में एक के बाद एक - तीन तीन कन्यायें ब्याह के योग्य हो गई हों, उसके दिल पर क्या बीतती है ? यह तो उसी के दिल में झाँककर देखना पड़ेगा।

जो स्थिति घूस के लेन-देन पर घटित होती है, वही स्थिति आज दहेज की है। घूस न लेने की प्रतिज्ञा तो हम-तुम कोई भी कर सकता है, पर घूस न देने की कसम कैसे खाई जा सकती है ? खासकर वहाँ, जहाँ घर से बाहर कदम रखा नहीं कि हर कदम पर घूस के टुकड़े डालने ही पड़ते हों भूखे भेड़ियों को। इस पर तुर्रा यह कि वह भी सलीके से दी जाये। घूस देना भी एक आर्ट है, कला है, जो हर एक के बलबूते की बात नहीं है। इस कारण सीधे-सादे सज्जनों का, ईमानदार आदमियों का तो घर से बाहर निकलना ही कठिन हो गया है।

यदि हम ट्रेन में बैठने के लिये टी.टी.आई. को पचास का नोट नहीं चढायें तो वह भी हमें ट्रेन में नहीं चढने देता है। बोलो ! कोई क्या करे ऐसी स्थिति में ? यात्रायें तो करनी ही हैं, कभी-कभी तो आरक्षण के बावजूद भी टी.टी. का टैक्स चुकाना आवश्यक हो जाता है, वरना क्या प्रमाण कि यही तुम्हारा नाम है? और वर्मा का शर्मा तथा शर्मा का वर्मा लिखा जाना जितनी सामान्य भूल है। उस सामान्य सी भूल को बिना घूस दिये सुधारना व यात्रा सुलभ कराना उतना ही दुर्लभ है।

ये तो अब विश्वव्यापी समस्यायें बन गई हैं। इनके बारे में अधिक सोचना ही पहाड़ से माथा मारने जैसा लगता है। हाँ, यदि दहेज और घूस लेने वालों को ही थोड़ा-बहुत नैतिकता का पाठ मिलता रहे और शासन भी थोड़ा अनुशासन की ओर ध्यान दे तो शायद कुछ सुधार हो सकता है। पर बेचारे शासन को अपनी कुर्सी बचाने से ही फुरसत नहीं है, वह अनुशासन-प्रशासन कब देखे ?

घूस देने वाले भी अपराधी हो सकते हैं, पर उनका अपराध शायद अक्षम्य अपराध नहीं है; क्योंकि ऐसा कौन है जो पसीने की कमाई को पानी में बहाना चाहेगा; पर उसकी मजबूरी है, बाध्यता है।

यदि वजन रखे बिना फाइल ही टेबल पर से उड़ जाये - गायब हो जाये तो उसे दबाने और समय पर आगे बढाने के लिये वजन तो रखना ही पड़ेगा न ? यदि कायदे से ही सब काम समय पर हो जाये तो कोई बेकायदा काम क्यों करेगा ?

खैर ! अभी डॉ. धर्मचन्द की समस्या घूस की नहीं, दहेज की थी। डॉक्टर ने बहुत सोचा, परवह बिना दहेज दिये निवृत्त नहीं हो पाया। अस्तु; जो हुआ सो हो गया, डॉक्टर दम्पत्ति अब संतुष्ट थे। अब वे तीनों बेटियों की शिक्षा और शादियाँ सम्पन्न कर चुके थे, उनके माता-पिता भी दिवंगत हो गये थे, अब केवल पति-पत्नी और 'हम दो हमारा एक' -कुल तीन ही प्राणी घर में रह गये थे।

राजू पढ नहीं सका था, उसका उन्हें उतना अफसोस नहीं

था, पर वह आवारा हो गया था, यह उनकी चिंता का विषय अवश्य था।

उन्होंने सोचा -''नौकरी तो वैसे भी नहीं करानी थी। न बन सका डॉक्टर तो न सही, मेडीकल स्टोर्स खुलवा देंगे। वह भी आरामदायक काम है, पर पहले इसमें कुछ सदाचार के संस्कार पड़ जावें और इसका यह आवारापन समाप्त हो, इसके लिये इसे कुछ दिन को कहीं बाहर ऐसे स्थान पर रखना होगा, जहाँ इसे थोड़ा सदाचार का वातावरण मिले और इन आवारा दोस्तों का साथ छूटे। साथ ही इसकी कम से कम ग्रेज्युएशन तक पढाई भी हो जावे। आजकल बिना ग्रेज्युएट हुये तो कोई पढा-लिखा ही नहीं कहलाता। तब तक यह शादी के योग्य भी हो जायेगा। अभी उम्र ही क्या है ? बीस बरस का ही तो है। इतनी जल्दी धंधे मे लगाकर भी क्या करेंगे ? कमाई की तो कोई समस्या है नहीं। न भी कमाये तो भी इसके खर्च लायक दस-बारह हजार रुपये मासिक आय तो मकान किराया और ब्याज वगैरह से ही हो जायेगी।

पर खाली दिमाग शैतान का घर होता है, अत: धंधे में उलझाना भी जरूरी है। पर अभी नहीं, अभी तो कम से कम तीन बरस के लिये इसे कहीं बाहर ऐसी जगह भेजना ही चाहिये।

इतने लम्बे सोच-विचार के बाद भी उन्हें यह समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर भेजें तो भेजे कहाँ ? कोई छात्रावास ? कोई हॉस्टल ? कोई रिश्तेदारी ? उन्हें कहीं कोई उपयुक्त जगह नजर नहीं आ रही थी। सोचते-सोचते संयोग से बैठक की सेंटर टेबल पर नजर चली गई, उस पर एक मासिक पत्रिका पड़ी थी, जिसके चौथे कवर पृष्ठ पर ही बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था, 'आत्मार्थी छात्रों को अपूर्व अवसर'। डॉक्टर ने कौतूहलवश यों ही उठाकर देखा, दो-चार लाइनें पढीं तो उन्हें ऐसा लगा कि यह तो राजू के हिसाब से बहुत ही अच्छी जगह है। क्यों न इस 'जैन सिद्धान्त महाविद्यालय' से सम्पर्क किया जाये ?

डॉक्टर जिसकी खोज में था, घर बैठे ही उसका समाधान उसे मिल गया था, इसलिये वह बहुत प्रसन्न था।

डॉक्टर तो कभी उस पत्रिका का ग्राहक बना नहीं था। आज तक उस पत्रिका को कभी उठाकर पढा भी नहीं था। डॉक्टर के पिताजी जरूर जैन पत्र-पत्रिकाओं के पढने के शौकीन थे और इनके आजीवन सदस्य भी थे। वे स्वयं भी पढा करते थे और मरीजों को पढाने के लिये डिस्पेंसरी के वेटिंग रूम में भी रख दिया करते थे।

दादाजी की भावनाओं के अनुसार वह सिलसिला अब और अधिक व्यवस्थित कर दिया गया है; क्योंकि मरने के बाद माता-पिता के प्रति भक्ति-भावना कुछ अधिक ही हो जाती है। उनके जीते-जी भले ही हम उनसे पानी की भी न पूछ पाये हों, पर मरने के बाद उनके चित्रों पर मालायें अवश्य डालते हैं। काश ! उनके जीवनकाल में यदि हम उनकी भावनाओं की कुछ कद्र कर पायें तो उनकी आत्मा को अधिक संतुष्टि दे सकते हैं। अस्तु !

सर्वप्रथम तो डॉक्टर ने मन ही मन अपने स्वर्गीय पूज्य पिताजी को धन्यवाद दिया; क्योंकि धन तो वे दे ही गये थे, धर्म के साधन भी दे गये थे और दे गये थे उस ज्वलंत समस्या का समाधान, जिसके कारण वह आज अधिक परेशान हो रहा था।

संयोग से राजू भी मैट्रिक में सैकण्ड डिविजन उत्तीर्ण हो गया था। बुद्धि में तो तेज था ही, अब उसे पढने को समय भी पर्याप्त मिल गया था।

''जो लौकिक कार्यों में होशियार होते हैं, वे ही पारलौकिक कार्यों में भी सफल होते हैं, केवल उसकी वृत्ति बदलने की देर है। कहा भी है -'ये कम्मे सूरा: ते धम्मे सूरा:' निश्चय ही यह काम वहाँ आसानी से हो ही जायेगा''- ऐसा विचार कर डॉक्टर ने राजू को उसी महाविद्यालय में प्रविष्ट कराने का निश्चय कर लिया था।

पर जैसे ही यह बात उसने अपनी पत्नी, बेटियों और रिश्तेदारों से कही तो कोई भी इस बात के लिये राजी नहीं हुआ। सभी एक स्वर में डॉक्टर की बात का विरोध करने लगे।

अरे ! क्या धरा है उस पढाई में ? वहाँ भेजकर कोई पण्डित थोड़े ही बनाना है। नहीं, नहीं; वहाँ नहीं जायेगा हमारा राजू ...।

बड़ी लड़की बोली -''पापा ! तुम्हें पता नहीं, वहाँ जाकर तो लड़के पूरे पण्डित बन जाते हैं, पण्डित। फिर वे हमारे-तुम्हारे साथ भोजन करना भी पसंद नहीं करते। उनके बड़े नखरे बढ जाते हैं। आपको पता है, वहाँ से लौटने पर ये लोग रात में नहीं खाते, अनछना पानी नहीं पीते, आलू-प्याज आदि कोई भी जमीकंद नहीं खाते और तो और दहीबड़ा, चाट और बाजार की मिठाइयाँ भी नहीं खाते, और पता नहीं क्या-क्या नहीं खाते ? अच्छी तरह सोच लो, समझ लो ! हमारी दिल्ली से एक लड़का गया था। वह वहाँ ऐसा बिगड़ा कि वहाँ से आकर अपने माँ-बाप को ही उपदेश देने बैठ गया। उन बेचारों को केवल उसके कारण दिन में ही खाना बनाना पड़ता है। आजकल आलू-बैंगन के सिवाय और साग-सब्जियाँ आती ही क्या हैं बाजार में ? पर उन हजरत को यह कुछ चलता ही नहीं है। इसकारण उसकी माँ बहुत परेशान रहती है। कहती है -'रोज-रोज क्या बनाकर रख दें, अपनी तो कुछ समझ में नहीं आता। अच्छा आ गया पण्डित बनके।' **(क्रमश:)**

स्वर्ण जयंती के मायने (2)

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल (कार्यकारी महामंत्री-टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

15 अगस्त 1947 को जिस स्वतंत्रता-संग्राम के परिणामस्वरूप देश स्वतंत्र हुआ वह कोई पहला स्वतंत्रता संग्राम नहीं था, उसके पूर्व भी शताब्दियों तक देश में छोटे-बड़े अनेकों स्वतंत्रता संग्राम प्रारम्भ हुये और काल के गाल में समा गये; पर देश आजाद नहीं हुआ।

क्यों ?

क्योंकि उनमें वह जीवनी शक्ति नहीं थी जो उस अभियान को लक्ष्य की पूर्ति होने तक जारी रख सके, तब वे सफल कैसे होते, सार्थक कैसे होते ?

कुछ मुट्ठीभर देशभक्त युवक फिरंगियों के दमनकारी शासन के खिलाफ उठ खड़े होते, शासन का विरोध करते, दमन का शिकार होते, परिस्थितियोंवश हिंसक गतिविधियों में लिप्त हो जाते और शासन द्वारा कैद कर लिये जाते तथा मौत के घाट उतार दिये जाते। इसप्रकार वे दुर्लभ, मुट्ठीभर देशभक्त जिनके लिये स्वतंत्रता सबसे अधिक महत्वपूर्ण थी, जिनमें देशभक्ति कूट-कूटकर भरी थी, जिनमें देशसेवा की प्रबल भावना थी और जो अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिये सबकुछ करने को तैयार थे असमय ही अपने प्राण गंवा देते थे। जब वे ही न रहे तो ऐसे में उनके आदर्शों का वाहक कौन बनता, कैसे उनके द्वारा चलाया गया अभियान इतना प्रबल और दीर्घजीवी बन पाता कि देश की स्वतंत्रता के महान लक्ष्य प्राप्त कर सके ?

गांधीजी की सफलता का राज क्या था ? वे कैसे देश को आजाद करवा सके ?

गांधीजी ने अहिंसा का मार्ग अपनाकर अपने आपको दीर्घजीवी बनाया, अपने आंदोलन को दीर्घजीवी बनाया। उनके इस दीर्घकालीन आंदोलन/अभियान के सामने अंग्रेज न टिक सके और इसप्रकार सदियों की गुलामी से देश को आजादी मिली।

ठीक यही बात आत्मकल्याण और तत्त्वप्रचार के क्षेत्र में भी लागू होती है।

अनादि के अज्ञान और भवभ्रमण से छुटकारा पाने व जगत में व्याप्त ज्ञान अन्धकार को दूर करके तत्त्वप्रचार करने के लिये भी एक ऐसे ही सतत अभियान की आवश्यकता थी जो क्षणिक न हो दीर्घजीवी हो।

अपने मत परिवर्तन के बाद पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी लगातार 45 वर्षों तक स्वयं स्वाध्याय में लीन रहे और दिन में दो बार प्रवचन और एक बार सायंकाल तत्त्वचर्चा के माध्यम से निरंतर मुमुक्षुओं को आत्महितकारी गूढ अध्यात्म का रसपान करवाते रहे, आत्मा और परमात्मा के स्वरूप से परिचित करवाते रहे, आत्मकल्याण का मार्ग प्रशस्त करते रहे।

उनके द्वारा उद्घाटित यह तीर्थंकरों, गणधरदेवों और आचार्यों द्वारा प्रतिपादित तत्त्वज्ञान देश-देशांतर में फैले, लम्बे समय तक कायम रहे और जन-जन की वस्तु बन सके इसके लिये एक सुव्यवस्थित, प्रभावशाली, वैज्ञानिक प्रचारतंत्र की आवश्यकता थी। दूरदर्शी और निस्पृही नेतृत्व तथा सम्पूर्णत: समर्पित, चरित्रवान कार्यकर्ताओं के दलबल की जरूरत थी। पूज्य गुरुदेवश्री से तत्त्वज्ञान पाकर अभीभूत सेठ श्री पूरणचंद गादिका ने जैनतत्त्व शिक्षण की भावना से जयपुर में टोडरमल स्मारक भवन का निर्माण करवाया और उसके माध्यम से तत्त्वप्रचार की गतिविधियों के संचालन हेतु इन्दौर में सेवारत पण्डित हुकमचंदजी भारिल्ल को जयपुर ले आये। समाज का सौभाग्य कि टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को भारिल्लजी जैसा विद्वान,योजनाकार और संचालक मिल गया, जिनके मस्तिष्क में जैन अध्यात्म और दर्शन के प्रसार व शिक्षण की योजनायें तो थी हीं, उन्हें पण्डित नेमिचंदजी पाटनी जैसे सक्षम प्रबंधक मिल गये, गोदिकाजी जैसे निस्पृही वित्तपोषक तो थे ही, बस फिर क्या था ?

तत्त्वप्रचार की दीर्घकालीन योजनाओं के क्रियान्वयन का दौर प्रारम्भ हो गया।

बालकों में धार्मिक संस्कारों के सिंचन के लिये और उन्हें धर्म और दर्शन का प्राथमिक ज्ञान देने के लिये एक सुरुचिपूर्ण, सर्वांगीण पाठ्यक्रम का निर्माण हुआ। उक्त पाठ्यक्रम को पढाने के लिये वीतराग-विज्ञान पाठशालाओं के संचालन के लिये श्री वीतराग-विज्ञान पाठशाला समिति की रचना हुई, परीक्षाओं के संचालन के लिये श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड की स्थापना हुई।

देशभर में पाठशालाओं की स्थापना का अभियान चल पड़ा। जैन स्कूलों में धर्म शिक्षण का यह पाठ्यक्रम लागू करने के सफल प्रयास हुये, इसप्रकार पूज्य गुरुदेवश्री के आशीर्वाद के साथ कोमलमति बालकों में उनके बचपन से ही गहन आध्यात्मिक ज्ञान और संस्कारों के सिंचन का महाअभियान का शुभारम्भ हुआ जो पचास वर्षों से आज तक सतत् जारी है और इस वटवृक्ष के रूप में आपके समझ विद्यमान है। **(क्रमश:)**

स्मारक की स्वर्ण जयन्ती

स्वर्ण जयन्ती का अवसर आया ऊँचा हुआ है माथा।
टोडरमल स्मारक की सब गायें गौरव गाथा।।
पूज्य कानजीस्वामी ने आकर है मान बढाया।
कुन्दकुन्द अमृत जयसेन के स्वर को यहाँ गुंजाया।।
टोडरमलजी की पावन रज जिस भूमि पर बिखरी।
दौलतराम जयचंद रायमल पुण्य भूमि यह निखरी।।
शस्यश्यामला जयपुर नगरी सबके मन को भायी।
पूरनचंद गोदिकाजी ने अद्भुत सामर्थ्य दिखाई।।
मुनि श्री विद्यानंद चैनसुख सबके मन को भाया।
स्मारक बनने का सपना निरखत मन हर्षाया।।
सन अड़सठ उन्नीस की उदित हुआ ध्रुवतारा।
नींव रखी अध्यात्म की टोडरमल स्मारक प्यारा।।
दिन सप्ताह साल और महिने अर्धशती है बीती।
हुकमचंद भारिल्ल मनीषी स्वप्न जंग है जीती।।
अब तो यह विख्यात नाम है आज विश्व में गूंजा।
'अखिल' जगत में मान बढा है नहीं देश में दूजा।।

– अखिल बंसल, जयपुर

स्वर्ण–जयन्ती के अवसर पर स्मारक की –

मन की बात

हो रहा हूँ मैं पचास का
तुम्हें खबर तो होगी
आओ मिलने मुझसे
वही क्रांति फिर से होगी
चार गज की बस जमीन नहीं मैं
हजारों कोसों तक फैला हूँ
अरे बस तुम ही तो हो
जिससे जिन्दा हूँ मैं
तुम न होते मैं कुछ भी नहीं
तब तो मैं अकेला बढा था
जो यहाँ तक पहुँचा हूँ
अब हजार पुत्र हैं मेरे साथ
चलेंगे तो सोचो कहाँ पहुँचेंगे

– सुदीप जैन, इन्दौर

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

30 मार्च से 6 अप्रैल	सिंगापुर	शिविर
22 से 24 अप्रैल	उदयपुर (राज.)	कन्या छात्रावास का उद्घाटन
4 से 7 मई	देवलाली	गुरुदेव जयन्ती
8 मई	दिल्ली	उपकार दिवस
15 मई से 1 जून	विदिशा	प्रशिक्षण शिविर
15 जून से 15 जुलाई	विदेश यात्रा	धर्मप्रचारार्थ

तृतीय वार्षिकोत्सव एवं वेदी शिलान्यास सानन्द संपन्न

तीर्थधाम आदीश्वरम्–चन्देरी (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 2 व 3 फरवरी को तृतीय वार्षिकोत्सव, श्री यागमंडल विधान, विमानोत्सव, श्रीजी विराजमान, मस्तकाभिषेक, वेदी शिलान्यास व विभिन्न उद्घाटन कार्यक्रम सानन्द संपन्न हुये।

इस अवसर पर पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर के प्रवचन का लाभ प्राप्त हुआ।

दिनांक 2 फरवरी को श्री राकेशजी जैन मेरठ द्वारा ध्वजारोहण हुआ। तत्पश्चात् यागमंडल विधानपूर्वक छत्र–चंवर–भामंडल–कलश–कमलासन आदि की शुद्धि की गई। दोपहर में शोभायात्रा, चौबीसी धर्मशाला में श्रीजी का अभिषेक एवं रात्रि में श्रीमती परिणति शास्त्री विदिशा व कु. प्रतीति शास्त्री जयपुर के निर्देशन में सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित हुये।

दिनांक 3 फरवरी को नौ वेदियों की शुद्धिपूर्वक श्रीजी विराजमान किये गये एवं भगवान ऋषभदेव का महामस्तकाभिषेक किया गया।

नवीन वेदी का शिलान्यास श्री महेन्द्रकुमार अखिलकुमार बंसल परिवार द्वारा विधि–विधानपूर्वक संपन्न हुआ।

दोपहर में समन्वयवाणी फाउण्डेशन जयपुर द्वारा Aaशा एसोसियेशन की राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्रीमती सरोज पाटनी को अहिंसा मित्र एवं चन्देरी के वयोवृद्ध मनीषी श्री कुन्दनलालजी भारतीय को चन्देरी गौरव अवार्ड से सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर श्री गोपालजी पाटनी पटना, श्री राकेशजी जैन मेरठ, श्री शैलेन्द्रजी जैन अलीगढ (अध्यक्ष–उत्तरांचल तीर्थक्षेत्र कमेटी), श्री प्रवीणजी जैन झांसी (सं. दैनिक विश्व परिवार), श्री सुमतकुमारजी लुहाड़िया सासनी, श्री अनिलजी जैन गाजियाबाद, श्री सुभाषजी जैन जबलपुर, मडावरा से श्री डी.के. सराफ व डॉ. शिखरचंदजी सिलोनिया, दिल्ली से अल्पसंख्यक आयोग के डिप्टी सेकेट्री श्री संदीपजी जैन व श्री विमलकुमारजी जैन के साथ ही स्थानीय जैन पंचायत के अध्यक्ष श्री आनन्दजी रोकड़िया, तीर्थधाम आदीश्वरम् के अध्यक्ष श्री अमोलकचन्दजी कठ्रया, नगर भाजपाध्यक्ष श्री आलोकजी तिवारी आदि महानुभाव उपस्थित थे।

तीर्थधाम आदीश्वरम् परिसर में संचालित औषधालय का उद्घाटन श्री शैलेन्द्रजी जैन अलीगढ व काँच के गेट का उद्घाटन श्री संदीपजी जैन डिप्टी सेकेट्री–अल्पसंख्यक आयोग द्वारा किया गया। इसके अतिरिक्त श्री प्रवीणजी जैन झांसी व श्री सुमतकुमारजी लुहाड़िया ने भी सहयोग किया।

विधि–विधान के समस्त कार्य पण्डित सुरेन्द्रकुमारजी सलूम्बर द्वारा शुद्ध तेरापंथ आम्नायानुसार संपन्न कराये गये। जिसमें पण्डित सतीशजी पिपरई, पण्डित अंकितजी शास्त्री एवं पण्डित आकाशजी शास्त्री खनियांधाना का विशेष सहयोग रहा।

सभी कार्यक्रम तीर्थधाम आदीश्वरम् के संस्थापक न्यासी श्री अखिलजी बंसल के मार्गदर्शन में संपन्न हुये। कार्यक्रम में श्री जयेन्द्रजी जैन 'निप्पू' का विशेष सहयोग रहा। **– अंशुल जैन**

दृष्टि का विषय

24 छठवाँ प्रवचन -डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

अब यदि वह उपयोग (पर्याय) त्रिकाली ध्रुव में अभेद-एकाकार नहीं हो तो आत्मा का ध्यान नहीं होगा। इन दोनों के बीच में यदि थोड़ी भी सांध रहेगी तो आत्मा का ध्यान नहीं होगा।

समयसार नाटक में एक दोहा आता है –

''सतरंज खेलै राधिका, कुबिजा खेलै सारि।
याकै निसिदिन जीतवौ, वाकै निसिदिन हारि।।१।।[१]

राधिका अर्थात् सुबुद्धि शतरंज खेलती है, इसमें उसकी सदा जीत होती है और कुब्जा अर्थात् दुर्बुद्धि चौपड़ खेलती है, इससे उसकी हमेशा हार होती है।''

अगर किसी से पूछा जाये कि शतरंज और चौपड़ में क्या अन्तर है?

शतरंज में अपनी बुद्धि काम करती है अर्थात् आप घोड़ा या हाथी, जहाँ भी चलना हो, वहाँ चल सकते हैं; सबकुछ बुद्धि पर निर्भर है। लेकिन चौपड़ में सबकुछ पासे पर निर्भर है, यदि पासे चलने पर चार आए तो चार घर चलो और छह आ जाये तो छह घर चलो। दूसरों के हाथ में बाजी देना, जड़ पासों के हाथ में बाजी देना; उसका नाम चौपड़ है तथा अपने हाथ में ही बाजी रखना; उसका नाम है शतरंज। **मैं अपनी आत्मा का अनुभव स्वयं करूँगा, इसका नाम है शतरंज खेलना और कर्म के उदय से होगा, इसका नाम चौपड़ खेलना है।**

इसलिए मैं कहता हूँ कि शतरंज खेलनेवाले से दिन-रात जीतते ही रहते हैं, कभी हारते नहीं हैं। शतरंज खेलनेवालों में दोनों ही पक्ष जीतते हैं, उन दोनों में कोई भी नहीं हारता है; क्योंकि दोनों ही बुद्धि का प्रयोग करते हैं, लेकिन चौपड़ में जीतनेवाला भी हारता है; क्योंकि वहाँ बुद्धि की नहीं, भाग्य की चलती है।

इसप्रकार नाटक समयसार में और भी छन्द हैं –

''जाके उर कुबिजा बसै, सोई अलख अजान।
जाकै हिरदै राधिका, सो बुध सम्यक्वान।।[२]

जिसके हृदय में कुब्जा अर्थात् कुबुद्धि का वास है, वह जीव अज्ञानी है और जिसके हृदय में राधिका अर्थात् सुबुद्धि है, वह ज्ञानी सम्यग्दृष्टि है।''

१. समयसार नाटक, पृष्ठ २८४ २. वही, पृष्ठ २८४

आगे और भी कहा है –

''मूरख के घट दुरमति भासी।
पण्डित हिये सुमति परगासी।
दुरमति कुबिजा करम कमावै।
सुमति राधिका राम रमावै।।[१]

मूरख के हृदय में कुबिजा उपजती है और ज्ञानियों के हृदय में सुमति का प्रकाश रहता है। दुर्बुद्धि कुब्जा के समान है, नवीन कर्मों का बंध कराती है और सुबुद्धि राधिका है, आत्माराम में रमण कराती है।''

इसप्रकार नाटक समयसार में बनारसीदासजी ने १०-२० छन्द लिखे हैं। वस्तु के स्वरूप को समझने के लिए परमत के उदाहरण भी दिए जाते हैं। मैंने भी 'द्रव्य में पर्याय शामिल हो गई है' – यह समझाने के लिए राधा-कृष्ण का उदाहरण दिया है।

हमारे महाविद्यालय का एक विद्यार्थी पर्यूषण पर्व में प्रवचन हेतु दिल्ली गया था तो वहाँ किसी एक भाई ने उससे कहा कि डॉक्टर साहब से यह कहना कि उन्होंने एक किताब में यह गलत लिखा है कि पहले के जमाने में जब मन्दिर अंधेरे में होते थे तो गर्भगृह में भगवान के दर्शन करने के लिए जानेवाले लोग 'दीपक' लेकर जाते थे और वहाँ पर कीटाणु न हो जाये और वायु की शुद्धि के लिए 'धूप' जलाते थे; लेकिन अब तो सब खुला हो गया है, दीपक और धूप जलाने की जरूरत नहीं है – ऐसा कहने से धूप व दीपक के जलाने की सिद्धि होती है; इसलिए उनसे यह कहना कि वे उस किताब में यह अंश निकाल देवें।

अरे भाई ! उसमें तो उदाहरण के रूप में अजैनियों के मंदिर की चर्चा की है कि उनके यहाँ ऐसा होता था, वह जैनियों की चर्चा नहीं है। उसके बाद मैंने यह भी लिखा है कि अब तो सब खुला हो गया है; इसलिए न तो दीपक की जरूरत है और न धूप की जरूरत है।

इसप्रकार उसमें यह लिखा है कि धूप व दीपक जलाने की जरूरत नहीं है। मन्दिर का जो उदाहरण दिया, वह तो उदाहरण के तौर पर है। उदाहरण तो अजैनियों के भी दिए जाते हैं। जैन साहित्य में पण्डित टोडरमलजी, पण्डित बनारसीदासजी तथा आचार्यों ने भी अजैनियों के उदाहरण दिए हैं। सिद्धचक्रविधान में भी बहुत उदाहरण हैं।

अतएव किसी बात को समझाने के लिए अजैनियों के उदाहरण देना अनुचित नहीं है। **(क्रमशः)**

१. समयसार नाटक, पृष्ठ २७८-७९

वार्षिकोत्सव सानन्द संपन्न

तीर्थधाम मंगलायतन-अलीगढ (उ.प्र.) : यहाँ दिनांक 3 से 7 फरवरी तक 13वें वार्षिकोत्सव का भव्य आयोजन श्री आदिनाथ पंचकल्याणक विधानपूर्वक किया गया।

इस अवसर पर आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त दोनों समय प्रथम प्रवचन पण्डित नीलेशजी जैन मुम्बई द्वारा समयसार की 15वीं गाथा पर एवं द्वितीय प्रवचन डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा मोक्षमार्गप्रकाशक पर हुआ। दोपहर में पण्डित सचिनजी जैन द्वारा प्रवचन हुये।

विधान के आमंत्रणकर्त्ता स्वर्गीय श्रीमती मणीबेन शाह की स्मृति में उनके सुपुत्र श्री मनुभाई और स्वर्गीय श्रीमती प्रमोदकुमारी जैन की स्मृति में श्री विजयकुमारजी जैन परिवार कुरावली थे। कार्यक्रम का उद्घाटन श्री पी.के. जैन रुड़की द्वारा तथा ध्वजारोहण श्री आई.एस. जैन मुम्बई द्वारा किया गया।

कार्यक्रम के अन्तिम दिन भगवान आदिनाथ का निर्वाणकल्याणक महोत्सव आदिनाथ भगवान के मस्तकाभिषेक व विशेष पूजन सहित अत्यंत भक्तिभावपूर्वक मनाया गया।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन एवं मंगलार्थी विद्यार्थियों द्वारा संपन्न हुये।

रत्नत्रय मंडल विधान एवं शिविर संपन्न

पौन्नूरमलै (तमिलनाडु.) : आचार्य कुन्दकुन्द की साधनाभूमि पौन्नूरमलै में श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट मुम्बई के तत्त्वावधान में दिनांक 20 से 25 फरवरी तक रत्नत्रय मंडल विधान एवं आध्यात्मिक शिक्षण शिविर सानन्द संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली द्वारा समयसार पर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा सात तत्त्व संबंधी भूलों पर एवं डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ द्वारा क्रमबद्धपर्याय पर विशेष व्याख्यानों का लाभ मिला। प्रतिदिन प्रात:कालीन प्रौढकक्षा के अन्तर्गत ब्र. हेमचंदजी देवलाली, पण्डित सुरेशजी शास्त्री गुना, पण्डित नन्दकिशोरजी शास्त्री काटोल, पण्डित सुकुमालजी शास्त्री गुना, पण्डित अंकुरजी शास्त्री भोपाल एवं पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर का लाभ मिला। साथ ही एक दिन 'तत्त्वज्ञान की रुचि बने कैसे व बढे कैसे' विषय पर आयोजित गोष्ठी में पण्डित देवांग शास्त्री मुम्बई, पण्डित अंकुर शास्त्री भोपाल एवं पण्डित सौरभ शास्त्री खड़ैरी ने अपने विचार व्यक्त किये।

इस कार्यक्रम में 6 प्रांतों से लगभग 200 साधर्मियों ने पधारकर धर्मलाभ लिया। समापन सभा के अन्तर्गत श्री अनंतराय ए. शेठ ने पौन्नूरमलै पर निर्मित आचार्य कुन्दकुन्द जैन संस्कृति सेन्टर की स्थापना व उद्देश्यों की जानकारी दी।

संपूर्ण कार्यक्रम पण्डित विरागजी शास्त्री के निर्देशन में संपन्न हुये। कार्यक्रम के व्याख्यानों की सी.डी. के लिये 09300642434 पर संपर्क करें।

क्यों लें महाविद्यालय में प्रवेश ?

1. श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय का सन् 1977 से 37 वर्षों का गौरवशाली इतिहास है।
2. यहाँ पूर्णत: धार्मिक परिवेश मिलता है, जिससे बालक संस्कारशील धर्मनिष्ठ बन जाते हैं।
3. डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित उदयजी शास्त्री, पण्डित गोमटेश्वरजी चौगुले, पण्डित ई.जिनकुमारजी शास्त्री, पण्डित अनिलजी शास्त्री, श्रीमती कमला भारिल्ल आदि अनेक विद्वानों के सान्निध्य में सतत् प्रशिक्षण से जैनतत्त्वज्ञान/दर्शन के प्रकाण्ड विद्वान बनते हैं।
4. पूरे देश में धार्मिक अवसरों पर प्रवचन/विधान आदि कार्यों के निमित्त भ्रमण के अवसर के साथ-साथ समाज के साथ रहने का प्रायोगिक ज्ञान सीखने को मिलता है।
5. जैनदर्शन के विद्वान होने से स्व के कल्याण के साथ-साथ अपने परिवार-समाज के कल्याण में निमित्त होते हैं।
6. छात्रावास में रहने से अपने हिताहित का स्वयं निर्णय करने की सामर्थ्य प्रगट होती है।
7. यहाँ विभिन्न प्रान्तों के छात्रों के साथ रहकर पूरी भारतीय संस्कृति का परिचय प्राप्त करने का अवसर मिलता है।
8. महाविद्यालय के छात्र औसतन प्रतिवर्ष राजस्थान बोर्ड तथा विश्वविद्यालय की परीक्षाओं में मैरिट में स्थान प्राप्त करते हैं।
9. संस्कृत भाषा में शास्त्री (बी.ए.) की डिग्री राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय की होने से अपेक्षाकृत रोजगार के अधिक उन्नत अवसर उपलब्ध होते हैं।
10. दर्शन व संस्कृत विषय के साथ आई.ए.एस. जैसी राष्ट्रीय प्रतियोगी परीक्षा व आर.ए.एस. आदि प्रान्तीय प्रतियोगी परीक्षाओं में उत्तीर्णता के अवसर प्राप्त होते हैं।
11. छात्रों की वक्तृत्वशैली, तर्कशैली एवं अध्ययनशीलता का विशेष विकास होता है, जिससे छात्र अन्य क्षेत्रों में भी सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

इसप्रकार श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय में प्रवेश पाकर आपके बालक का सर्वांगीण विकास होता है। वह अपने और अपने परिवार, समाज की उन्नति में निमित्त होता है। जैनदर्शन का विद्वान बनकर स्व-पर कल्याण के सम्पादन हेतु अग्रसर होता है।

क्या आप नहीं चाहते कि आपका बालक भी ऐसा हो ? यदि हाँ.. तो महाविद्यालय में प्रवेश हेतु बालक को **दिनांक 15 मई से 1 जून 2016 तक विदिशा** में आयोजित शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर में अवश्य भेजें। **पण्डित उदय शास्त्री (मो. 07611968465)**

फॉर्म मंगाने का पता : श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, ए-4, बापूनगर, जयपुर-15, फोन-0141-2705581, 2707458

मुलायमसिंह यादव सम्मानित

मंगलायतन-अलीगढ (उ.प्र.) : यहाँ स्थित दिल्ली पब्लिक स्कूल में दिनांक 18 फरवरी को समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मुलायमसिंहजी यादव का सम्मान समारोह आयोजित किया गया।

समारोह का आयोजन श्री मुलायमसिंहजी यादव हेतु किया गया था, किन्तु किसी कारणवश वे उपस्थित नहीं हो सके। उनके स्थान पर उनके सुपुत्र व उ.प्र. के मुख्यमंत्री श्री अखिलेशजी यादव उपस्थित हुये और सम्मान ग्रहण किया।

अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर आयोजित इस सम्मान समारोह में देश-विदेश की जैन समाज के हजारों प्रतिष्ठित जैन विद्वान, उद्योगपति व अन्य सामाजिक एवं धार्मिक संस्थाओं के प्रमुखों ने उनका अभिनन्दन किया। ज्ञातव्य है कि श्री मुलायमसिंहजी ने अपने कार्यकाल के दौरान जैन समाज को उत्तरप्रदेश में सर्वप्रथम अल्पसंख्यक घोषित किया था व केन्द्रीय स्तर पर इसमें अहम भूमिका निभाई थी। इसी कारण पूरे भारतवर्ष व अन्तरराष्ट्रीय स्तर की अनेक शीर्षस्थ जैन संस्थाओं की ओर से इनका सम्मान समारोह किया गया।

अभिनन्दन समारोह में अखिल भारतीय दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद् के अध्यक्ष एवं मंगलायतन विश्वविद्यालय के जैनदर्शन विभाग के डीन डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर, भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासमिति के अध्यक्ष श्री अशोकजी बड़जात्या इन्दौर, प्रसिद्ध उद्योगपति श्री अजितप्रसादजी जैन दिल्ली, श्री आदीशजी जैन दिल्ली, श्री अजितजी जैन बड़ौदा, तीर्थधाम चिदायतन हस्तिनापुर के उपाध्यक्ष श्री जे.के. जैन शामली, आत्मार्थी ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री विमलकुमारजी नीरु केमिकल्स दिल्ली, श्री जीवेन्द्र जैन गाजियाबाद, श्री आर.के. जैन देहरादून, डॉ. अरुणजी जैन (प्राचार्य-दौसा संस्कृत कॉलेज), श्री रविकुमारजी करहल, डॉ. योगेशजी जैन, श्री आलोकजी जैन कानपुर, श्री राकेशजी खेकड़ा, श्री अनिलजी बुलन्दशहर, श्री हैप्पी जैन इटावा के अतिरिक्त विभिन्न राष्ट्रीय व अन्तरराष्ट्रीय संगठनों के प्रमुखों एवं अनेक प्रतिष्ठितजनों द्वारा कई समूहों में अभिनन्दन किया गया।

तीर्थधाम मंगलायतन व दिल्ली पब्लिक स्कूल के संरक्षक श्री पवनजी जैन ने श्री मुलायमसिंहजी का परोक्षरूप से अभिवादन किया।

(पृष्ठ 1 का शेष...)

भगवान की प्रतिमाओं की प्राण प्रतिष्ठा की गई। संपूर्ण महोत्सव में पूजन, प्रवचन, आध्यात्मिक गोष्ठियों, बालकक्षाओं, भक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धूम मची रही। संपूर्ण कार्यक्रम में कोलकाता, राजकोट, मुम्बई, विदिशा, ग्वालियर, भोपाल, सागर, शिवपुरी आदि स्थानों से लगभग 5 हजार साधर्मियों ने पधारकर धर्मलाभ लिया।

कार्यक्रमों का मंच संचालन पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली एवं पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा द्वारा तथा महोत्सव का निर्देशन पण्डित राजकुमारजी शास्त्री गुना द्वारा हुआ। ●

समयसार शिविर व समयसार विधान संपन्न

सिद्धायतन-द्रोणगिरि (म.प्र.) : यहाँ सिद्धायतन के 8 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में दिनांक 3 से 10 फरवरी को देश में प्रथम बार संपूर्ण समयसार मंडल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर ग्रन्थाधिराज समयसार पर ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा परिशिष्ट पर, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली द्वारा कर्ताकर्म अधिकार व सर्वविशुद्धज्ञान अधिकार पर एवं डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर द्वारा शेष समयसार पर प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ। प्रात:कालीन व्याख्यानमाला में क्रमश: पण्डित शुभमजी शास्त्री सिद्धायतन, ब्र. चंद्रेशजी शिवपुरी, ब्र. नन्हे भैया सागर, पण्डित निखिलजी मुम्बई, पण्डित रूपचंद्रजी बण्डा, पण्डित गुलाबचंदजी बीना एवं पण्डित जिनेशजी शास्त्री मुम्बई द्वारा व्याख्यान हुये। इसके अतिरिक्त पण्डित कोमलचंदजी टडा, पण्डित विरागजी जबलपुर व पण्डित सुरेशचंदजी पिपरा आदि विद्वानों का भी समागम प्राप्त हुआ।

कार्यक्रम का शुभारंभ मंगलकलश शोभायात्रा से हुआ। ध्वजारोहण श्री विजयभाई शाह एवं शांतिभाई शाह दादर मुम्बई द्वारा हुआ। शिविर उद्घाटनकर्ता श्री अशोकजी चाणेकर एवं विधान उद्घाटनकर्ता पण्डित सिद्धार्थजी दोशी रतलाम थे। मुख्य अतिथि श्री दिलीपभाई मुम्बई थे। शिविर आमंत्रणकर्ता श्री जयकुमारजी शेटे देवलाली व डॉ. वासंतीबेन शाह मुम्बई एवं विधान आमंत्रणकर्ता डॉ. वासंतीबेन शाह मुम्बई थी। शिविर में लगभग 400 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया। आगामी 9 से 11 अप्रैल तक नवनिर्मित धार्मिक गाथा निलय का लोकार्पण किया जायेगा। समापन के अवसर पर ट्रस्ट कमेटी ने सभी विद्वानों का सम्मान किया तथा आभार प्रदर्शन ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री चंद्रभानजी जैन ने किया। **- प्रद्युम्न फौजदार**

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

प्रकाशन तिथि : 27 फरवरी 2016

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127